# लॉक डाउन से हरा सोना भी प्रभावित

**पुरुषोत्तम निषाद**
**बालोद, छत्तीसगढ़**

कोरोना संकट से उभरे लॉक डाउन ने कल कारखानों से लेकर जल, जंगल, ज़मीन तक को प्रभावित किया है। शहरों में जहां बड़े बड़े उद्योग बंद हो गए वहीं ग्रामीण क्षेत्रों की आजीविका भी प्रभावित हुई है। इस लॉक डाउन ने छत्तीसगढ़ के विख्यात तेंदूपत्ता संग्रहण कार्यों पर भी असर डाला है। तेंदूपत्ता को 'द ग्रीन गोल्ड' (THE GREEN GOLD) के नाम से भी जाना जाता है। जंगल की यह एक हरी पत्ती छत्तीसगढ़ के वनवासियों के लिए सोना से कम नहीं है। प्रदेश में बहुतायत मात्रा में इस वनोपज का संग्रह वर्ष में एक बार किया जाता है। आदिवासियों और वन क्षेत्र के लोगों की आय की नगदी स्रोत यही तेंदूपत्ता संग्रहण है। इस पत्ता से बड़ी संख्या में बीड़ी बनाई जाती है। बीड़ी का कारोबार करने वाले देश भर के व्यापारी इसे खरीदने आते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें लगने वाला फल भी छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत ही चाव से खाया जाता है।

राज्य सरकार की महत्वपूर्ण वनोपज में से एक तेंदूपत्ता संग्रह है, परंतु वैश्विक कोरोना वायरस ने सुदूर बीहड़ वन क्षेत्र के लोगों तक के जीवन पर अपना प्रभाव दिखाया है। इस वायरस ने समाज के सभी वर्ग को प्रभावित किया है। राज्य के बालोद जिला के डौंडी ब्लाक में लॉक डाउन के कारण तेंदूपत्ता की खरीदी लक्ष्य से कम हुई है। क्षेत्र में लॉक डाउन फेज़ तीन एवं चार में प्रवासी मजदूरों के घर वापसी से करोना संक्रमितों की संख्या में वृद्धि हुई। हालाँकि यह प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों से ही थे। लेकिन उनके वापस लौटने के साथ ही संख्या में तेज़ी से वृद्धि होने लगी है। जिससे क्षेत्र में पूरी तरह लॉक डाउन लागू हो गया। फलत: लोगों के सामान्य कामकाज भी प्रभावित हुए। साथ ही रोजगार गारंटी, खेती-किसानी, महुआ एवं तेंदूपत्ता संग्रहण पर भी कोरोना का ग्रहण छा गया है।

क्षेत्र में 10 से 12 दिन तक चलने वाले तेंदूपत्ता संग्रहण महज चार-पांच दिन ही हो पाया। जो सरकार के लक्ष्य से बहुत कम है। इससे राज्य व वनवासियों की अर्थव्यवस्था पर विपरीत असर हुआ है। विगत वर्षों में 80 से 90% संग्रहण हुआ करता था। परंतु इस बार डौंडी वनोपज परिक्षेत्र में 54% पत्तों का ही संग्रहण हो पाया। ग्रामीण प्रवासी मजदूरों के घर आगमन से ब्लाक के ग्राम कोकन तथा डौंडी में करोना पाजेटिव मिलने के बाद ब्लॉक भर में गांव वालों ने लॉक डाउन का पालन करते हुए पत्ता तोड़ने में कोई रुचि नहीं दिखाई। जिसका असर सीधा संग्रहण कार्य पर पड़ा है।

गांव में बच्चा-बच्चा जानता है लॉक डाउन, सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क, क्वारेटिन और हाथ धोने जैसे सुरक्षा उपायों को। पूरी सतर्कता के साथ वायरस और महामारी की रोकथाम के लिए प्रशासन और डब्लूएचओ द्वारा जारी सभी दिशानिर्देशों का गांवों में पालन किया जा रहा है। वास्तव में इस संकटकाल में केवल एक ग्राम ही नहीं बल्कि 135 करोड़ देशवासियों द्वारा सुरक्षा और निर्देशों का पालन किया जा रहा है। इसके बदले सब कुछ ना कुछ खोऐ है परंतु गांव वालों को विश्वास है कि 'जान है तो जहान है' हम जीतेंगे, कोरोना हारेगा।